१७ दिसंबर: भूटान के स्वतंत्रता-दिवस के अवसर पर

भूटान के इतिहास में हिंदी की भूमिका

□ अवधेश

हिंदी प्रेमी दिवंगत
द्रुक ग्यालपो जिग्मे वांगचुक

भूटान तिब्बती (भोट) धर्म, संस्कृति और शिक्षण परंपरा के समीप रहा है. राजतंत्र स्थापित (१९०७) होने के पहले वहां धर्मराजा का धर्मशास्त्रीय प्रशासन था. धर्मराजा दलाई लामा के समान बुद्ध के अवतार माने जाते थे. धर्मराजा के कार्यमुक्त होने के पश्चात उनके उत्तराधिकारी की पहचान, ज्ञानी भिक्षु कुछ चिह्न-विशेषों के आधार पर, नवजात शिशुओं के रूप में किया करते थे. द्रुक (भूटानी) संस्कृति में विशाल बौद्ध-विहारों (जोंग) का विशेष स्थान है. धर्मराजा शीतकाल में पुनाखा और ग्रीष्मकाल में थींपू के बौद्ध-विहारों से अपना प्रशासन चलाया करते थे. इन विहारों में रहनेवाले भिक्षु धर्मचर्चा, प्रशिक्षण, धार्मिक अध्ययन और प्रशासन में अपना समय व्यतीत किया करते थे. मनन, स्मरण, तर्क-वितर्क और गुरु-शिष्य परंपरा द्रुक शिक्षण पद्धति के मुख्य आधार थे. यह सीमित शिक्षा भी भिक्षुओं और सामंतों तक ही सीमित थी और इसका माध्यम तिब्बती भाषा थी. प्रायः प्रत्येक धर्मभीरु व्यक्ति के लिए धर्मशास्त्रों का अध्ययन-मनन आदर्श माना जाता था, अतः साक्षरता व्यापक होती थी.

बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक से भूटान के इतिहास में महान और दूरगामी परिवर्तनों का प्रारंभ हुआ. धर्मशास्त्रीय प्रशासन का अंत, राजतंत्र की स्थापना (१९०७) और भूटान का ब्रिटिश साम्राज्य से जुड़ना (१९१०) इन परिवर्तनों की मुख्य कड़ियाँ हैं. उसके बाद द्रुक नरेश उगने वांगचुक, अन्य भारतीय नरेशों के समान वाइसराय से मिलने कलकत्ता और सम्राट से मिलने दिल्ली-दरबार (१९११) गये. एक अनुभवी प्रशासक, कूटनीतिज्ञ और राष्ट्र-निर्माता के रूप में द्रुक-नरेश ने भारतीय संदर्भ में भूटान की भूमिका सीमित पायी. महाराजा को अंग्रेजी का ज्ञान नहीं था, परंतु वे हिंदी बोल सकते थे. उन्होंने अनुभव किया कि तत्कालीन धर्मशास्त्रीय द्रुक शिक्षण-पद्धति अपर्याप्त है. अतः दिल्ली से वापसी के बाद उन्होंने ४५ लड़कों को पढ़ने के लिए कलिंपोंग (भारत) भेजा. अगले वर्ष (१९१५) महाराजा ने ऐतिहासिक पहल की और अपने स्थायी निवासस्थान बूमथांग (मध्य-भूटान) में भूटान का पहला आधुनिक स्कूल खोला. जहां अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी की भी शिक्षा दी जाती थी. फिर तो एक ऐसा ही स्कूल राजा दोरजी ने 'हा' नामक स्थान पर खोला.

हिंदी की भूमिका

इन दोनों स्कूलों का पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति आज की दृष्टि से अपर्याप्त थी, परंतु इनकी मुख्य भूमिका अंग्रेजी और हिंदी का ज्ञान कराने की थी.तब अंग्रेजी विभिन्न क्षेत्रों को प्रशासन के समीप लाने की कड़ी समझी जाती थी. महाराजा ने अंग्रेजी का महत्व स्वीकार किया. परंतु यह भी अनुभव किया कि संपूर्ण भारतीय संदर्भ में हिंदी की भूमिका व्यापक है. भले ही हिंदी प्रशासन की भाषा नहीं थी, परंतु दैनिक जीवन में गली-कूचों से ले कर प्रशासन की प्राचीर के भीतर हिंदी बोली और समझी जाती थी. साथ-ही-साथ हिंदी का अध्ययन अपेक्षाकृत आसान समझा जाता था. फलस्वरूप बूमथांग के स्कूल में जनसाधारण के बच्चों के साथ राजकुमार भी हिंदी का अध्ययन करते थे. बाद में बूमथांग का स्कूल केवल हिंदी स्कूल बन गया और 'हा' स्कूल में हिंदी के साथ अंग्रेजी भी पढ़ायी जाती रही.

सिक्किम स्थित राजनीतिक अधिकारी एफ. एम. बेली ने १९२२ की अपनी भूटान यात्रा की रपट में लिखा, ''१७ वर्षीय राजकुमार थोड़ी अंग्रेजी के साथ हिंदुस्तानी बोल लेते हैं.'' इन्हीं राजकुमार जिग्मे वांगचुक ने पांच साल बाद १३ मार्च १९२७ द्वितीय द्रुक ग्यालपो (भूटान-नरेश) के रूप में सिंहासनारूढ़ होने के अवसर पर, अपना भाषण हिंदी में पढ़ा. भूटान के अनुभवी एजेंट सोनम तोबग्ये दोरजी ने राजनीतिक अधिकारी गंगटोक (सिक्किम) को (२८ सितंबर १९२९) सूचना दी कि महाराजा उन्हें हिंदी में पत्र लिखेंगे.

पत्राचार हिंदी में

इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि प्रथम महाराजा के समय पत्राचार की भाषा तिब्बती थी, परंतु दूसरे महाराजा ने चार्ल्स बेल और कर्नल बेली को हिंदी या तिब्बती में भी कई व्यक्तिगत और प्रशासकीय पत्र लिखे. प्रायः तिब्बती में लिखे पत्रों के अंग्रेजी अनुवाद राजा दोरजी अलग से नत्थी कर दिया करते थे. हिंदी पत्र महाराजा अपने हाथ से ही लिखते थे. लेकिन प्रायः वे हस्ताक्षर अंग्रेजी में ही करते थे.

एक पत्र के उत्तर में महाराजा ने जो पत्र भेजा वह ज्यों का त्यों इस प्रकार है:

टोंगसा जोंग, भूटान
८-५-३०

''मेरे प्रिय मित्र कर्नल बेली को मेरा हर दिन का अति प्रेमी नमस्कार पहुंचे.

आपने डाकसे भेजा हुआ दोनों चिट्ठी पाया और आप और आपके मेम के कुशल मंगल का हाल सुन कर आनंद की सीमा न रहा. और खास करके वहां के ऐसे साफ वर्णन जिसे पढ़ कर आप स्वयं ही से भेंट हुआ के ऐसा अत्यंत आनंदित हुआ. बहुत बहुत धन्यवाद.

"आपने मेरे स्वर्गीय बाप और उस्के कर्मचारियों का फोटो जो लड़ाई के वक्त टीबेट (१९०४) में थे, भेजा था, उस्के लिए भी बहुत धन्यवादी हूं और मैं पहचान सकता हूं कि कर्मचारियों में से दो तो हमारे घराने के हैं और शेष लोग को भी पहचान सकता हूं. आपने कहला भेजा है कि बादशाह उस्के बगीचे में रोपने के वास्ते मेरे राज्य के पौधे दर्कार हैं. सो आप दया करके कालिंपोंग में राजा (सोनम) तोबग्ये (दोरजी) को जो पौधे दर्कार हैं. चिट्ठी भेज दीजिए और मैं वहां से मेरा नौकर भी भेज दुंगा और मेरे राज्य में जो पौधे हैं. बहुत खुशी के साथ (बादशाह को) चढ़ाउंगा.

"आजकल यहां टोड़ सा जोड़ भी भीतर के जो कमड़े (रे) बनाना है बना चुका हूं और अब थोड़ा-२ दीवान लगाना और छत लगाना है, लगा रहे हैं और अब जल्दी ही पूरा हो जावेगा. मैं अपना कमड़ा (रा), पुराना मंदिर और एक नया मंदिर का छत चद्दर लगाता हूं. मैं कभी-२ रैयतों के मदद में लकड़ी निकलवाने और पत्थर निकलवाने जाता हूं. कभी-२ शिकार करने जाते हैं और सोलह जंगली सूअर और दो मृग तक पाये हैं. आपके कृपा से सिक्का भी छपवाया (ढलवाया?) और प्रायः बीस सहस्र तक छापा (ढलवाया?) और जो मुझे खर्च करना है इनसे करता हूं और रैयतों को दिया. आप और आपके मित्रों के वास्ते मैं मेरा साठ सिक्का तक भेजता हूं.... मेरा एक फोटो, मेरी औरत और मेरे बच्चा का एक फोटो और आप लोगों के भलाई का पत्र लगातार भेज दीजिये. आप और आपके मेम को मेरा प्यार और आपके मित्र जो मुझे चिन्हतें हैं मेरा सलाम दीजिये.

''आपको सदा प्यारा मित्र-जे वांगचुक.''

भूटान की तत्कालीन उथल-पुथल हिंदी के माध्यम से:

''बहुत दिनों से मैं आपको लिखना चाहता था पर हमारे देश में अचानक एक गोलमाल उठ खड़ा हुआ जिसके कारण से मैं आपको लिखने नहीं सका...

''बीते साल से ही लामा शाबडूंग (धर्मराजा) रैयतों और गुप्त रीति से हमारे ऊपर से अत्याचार कर रहे थे. पता चला है कि उसने हम लोगों को सर्वनाश करने के लिए नाना किस्म का भेद आदि लगाया है. इस प्रकार उपद्रव करने पर भी हम लोग सहते ही रहा था. पर फिर इतना करने पर भी संतुष्ट न होकर नीचे (भारत में) महात्मा गांधी के पास सहायता के लिए उसका आदमी और भाई भेज दिया है. फिर तिब्बत में यह पता लगाने के वास्ते आदमी भेजा है कि पेनदेन रीन पोछे (लामा) चीन का पल्टन के साथ चीन से तिब्बत में आया है कि नहीं. यदि पेनदेन (लामा) आया होता तो वह पेनदेन से यह अनुरोध करनेवाला था कि वे उसको भूटान को अपने वंश में करने में सहायता करें. उसमें ऐसा राजद्रोही करने पर भी सहते२ ही रहा था.पर इतने में सुना कि फिर वह भूटान छोड़ कर उपर्युक्त जनों से भूटान अपने बश में करने के लिए सहायता मांगने जानेवाला है... उसको (धर्मराजा को) जाने से रोक रखा है और उस पर पहरा दिया जाता है. इस विषय में उनके (धर्मराजा के) सहचरियों को भी गिरफ्तार कर लिया है. और अभी तक् इस बात (समस्या) को तय कर नहीं चुका हूं.''

उपरोक्त पत्र लिखे जाने के (१८-११-१९३१) चंद दिनों बाद धर्मराजा पुनारवा के नजदीक तालो बौद्ध-बिहार में मृत पाये गये.

कर्नल बेली को महाराजा का एक और पत्र

क्युनगा रपतेन तोरखा
९-१-१९३८

मेरा प्रिय मित्र

कुछ दिन आगे मुझे (राजा) एस. टी. दोरजी से खबर मिली कि आप अपनी मेमसाहिबा तथा बेटी सहित इस वक्त कालिंगपोंग सकुशल पधारे हैं. इसे सुनकर मैं अत्यंत खुश हुआ कि दूसरे साल मैं हिंदुस्तान जाते वक्त आप लोगों से भी मिलने का सुभाग्य प्राप्त होगा. हमारे परम पुज्यमान पिता के समय ही से आप लोगों के साथ मित्रता के संबंध होने पर भी चिट्ठी लिखा लिखी की सिवाई मिलने का अवसर नहीं मिला है. आजकल यहां पर मैं भी अपने परिवार के साथ सब अच्छे हैं. बहुत-२ सलाम के साथ

आपका शुभचिंतक
जे. वांगचुक

स्वतंत्रता संग्राम और अंग्रेजी राज तक हिंदी प्रायः सफल संपर्क भाषा के रूप में समझी जाती थी और सीमांत समुदाय अपने को भारतीय जनता-जनार्दन से जुड़ा पाता था. यह एक अजीब बात है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सीमांत क्षेत्रों में हिंदी के प्रति उत्साह कम हो गया है. इस प्रक्रिया की पृष्ठभूमि और भूमिका अपने आपमें शोध का विषय हो सकती है. ■■■